›

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

दूर शिक्षा निदेशालय
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
गांधी हिल्स, पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र – 442 001
फोन / फैक्स नं. : 07152&247146 वेब साईट : www.hindivishwa.org

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम
सत्र 2016-18
पाठ्यक्रम कोड : एम ए एच डी – 010

द्वितीय सेमेस्टर

सत्रीय कार्य

निर्देश-पुस्तिका

क्रमांक	सत्रीय कार्य कोड	किसे भेजें	सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र के पते पर सत्रीय कार्य पहुँचने की निर्धारित अंतिम दिनांक
01.	एम ए एच डी – 07	सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र के पते पर	दूर शिक्षा निदेशालय द्वारा घोषित सूचनानुसार
02.	एम ए एच डी – 08		
03.	एम ए एच डी – 09		
04.	एम ए एच डी – 10		
05.	एम ए एच डी – 11		
06.	एम ए एच डी – 12		

- **अध्ययन केन्द्र पर पंजीकृत विद्यार्थी अपने-अपने सत्रीय कार्य अध्ययन केन्द्र पर ही जमा कराएँ। ऐसे विद्यार्थियों के सत्रीय कार्यों का मूल्यांकन सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र पर ही किया जाएगा।**

पुरन्दरदास
पाठ्यक्रम संयोजक

दिनांक: 20 फरवरी, 2017

दूर शिक्षा निदेशालय
एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र 2016-18, द्वितीय सेमेस्टर

सत्रीय कार्य
दिशा-निर्देश

एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2016-18, द्वितीय सेमेस्टर की 06 पाठ्यचर्याओं में से विद्यार्थी को प्रथम 04 अनिवार्य पाठ्यचर्याओं तथा पंचम (वैकल्पिक) पाठ्यचर्याओं के निर्धारित 02 विकल्पों में से किसी 01 पाठ्यचर्या का चयन करना है। विद्यार्थी को प्रथम 04 अनिवार्य पाठ्यचर्याओं तथा पंचम वैकल्पिक पाठ्यचर्या (विद्यार्थी द्वारा चयनित) में प्रत्येक में 01 – 01 अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य (टी.एम.ए.) सम्पूर्ण कर जमा कराना अनिवार्य है। इस प्रकार विद्यार्थी को द्वितीय सेमेस्टर में कुल 05 सत्रीय कार्य संपन्न कर जमा कराने हैं।

सत्रांत परीक्षा में विद्यार्थी को उसी पाठ्यचर्या का प्रश्नपत्र हल करने के लिए दिया जाएगा जिस वैकल्पिक पाठ्यचर्या का चयन विद्यार्थी द्वारा सत्रीय कार्य हेतु पंचम पाठ्यचर्या के लिए किया जाएगा। विद्यार्थियों से आग्रह है कि वे परीक्षा आवेदन पत्र में अपने द्वारा पंचम पाठ्यचर्या के लिए चयनित वैकल्पिक पाठयचर्या का क्रमांक, शीर्षक एवं कोड स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करें। यथा – **हिन्दी पत्रकारिता** पाठ्यचर्या के लिए विकल्प – 01, पाठ्यचर्या का शीर्षक – हिन्दी पत्रकारिता, पाठ्यचर्या कोड – MAHD – 11 लिखिए।

प्रत्येक सत्रीय कार्य में विद्यार्थी को कुल 06 प्रश्नों के विश्लेषणात्मक उत्तर लिखने हैं। प्रत्येक प्रश्न के अधिकतम अंक 05 हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 800 शब्दों में लिखना है।

पूर्ण किये गए सत्रीय कार्यों को मूल्यांकन हेतु निर्धारित अंतिम दिनांक से पूर्व सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र पर जमा कराएँ तथा उनकी एक छायाप्रति अपने पास अनिवार्यतः सुरक्षित रखें।

सत्रीय कार्य का उद्देश्य :-

सत्रीय कार्य का उद्देश्य विश्वविद्यालय द्वारा विद्यार्थी को उपलब्ध कराई गई पाठ्य-सामग्री को विद्यार्थी की हस्तलिपि में पुनः प्राप्त करना नहीं है अपितु विद्यार्थी की अध्ययन-प्रवृत्ति में निरन्तरता बनाए रखने के साथ ही उसके द्वारा अब तक किए गए अध्ययन का मूल्यांकन करना है। विद्यार्थी ने पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित पाठ्य-पुस्तकों तथा सम्बन्धित पाठ्य-सामग्री को कितना पढ़ा-समझा है, उसका विवेचन-विश्लेषण करने की कितनी क्षमता अर्जित की है तथा सम्बन्धित पाठ्य के विषय में उसका अपना दृष्टिकोण कितना विकसित हुआ है ? - आदि उद्देश्यों को दृष्टि में रखने के साथ-साथ विद्यार्थी की लेखन-क्षमता का मूल्यांकन करना भी सत्रीय कार्य का लक्ष्य है। विद्यार्थियों को सत्रीय कार्यों में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखते समय उपर्युक्त उद्देश्यों को स्मरण रखना चाहिए तथा प्राप्त पाठ्य-सामग्री का पुनर्प्रस्तुतीकरण न करते हुए अध्ययनोपरान्त अपनी विकसित विचार-क्षमता के आधार पर ही उत्तर लिखने का प्रयास करना चाहिए। पूछे गए प्रश्न के उत्तर में विद्यार्थी का अध्ययन, उसकी आलोचनात्मक दृष्टि, पाठ्य के विषय में उसकी अपनी समझ आदि के साथ ही भाषा एवं वर्तनी सम्बन्धी ज्ञान की अपेक्षा की जाती है। उपर्युक्त अपेक्षाओं को दृष्टि में रखकर ही विद्यार्थी द्वारा प्रेषित सत्रीय कार्यों का मूल्यांकन किया जाएगा।

सत्रीय कार्य लेखन :-

विद्यार्थी सत्रीय कार्य लिखने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें :-

01. योजना :- प्रथमतः सत्रीय कार्य के सभी प्रश्नों को पढ़कर उनका आशय समझ लीजिए। तदनन्तर सम्बन्धित पाठ्य-सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़िए। पूछे गए प्रश्नों से सम्बन्धित इकाइयों को मनोयोग से पढ़िए। निर्धारित पाठ्य-पुस्तकों का गहन अध्ययन कीजिए। साथ ही, सुझाई गई सहायक पुस्तकों को भी रुचिपूर्वक पढ़िए। पढ़ते समय प्रत्येक उत्तर से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्य चिह्नित कर लीजिए और अंतिम प्रति तैयार करने से पूर्व उन्हें तार्किक क्रम में व्यवस्थित कर लीजिए।

02. संगठन कौशल :- अपने उत्तर को अंतिम रूप देने से पूर्व एक कच्ची रूपरेखा बना लीजिए, श्रेष्ठतम तथ्य संकलित करने का प्रयास कीजिए और उसके समुचित विवेचन-विश्लेषण हेतु चिन्तन कीजिए। उत्तर लिखते समय प्रस्तावना और समाहार पर विशेष ध्यान दीजिए। कृपया ध्यान रखिए कि पूछे गए प्रश्नों के उत्तर तर्कसंगत हों, वाक्य-विन्यास और वर्तनी संबंधी त्रुटियाँ न हों अनुच्छेदों में परस्पर तारतम्यता हो तथा भाव, शैली और प्रस्तुति का पर्याप्त संयोजन किया गया हो।

03. सत्रीय कार्य लेखन :- सत्रीय कार्य विद्यार्थी द्वारा स्वयं की हस्तलिपि में संपन्न किया जाना है। पूछे गए प्रश्नों की अंतिम प्रति स्वच्छ, स्पष्ट, पठनीय अक्षरों में लिखित, वर्तनी संबंधी दोषों से रहित, प्रारूपबद्ध और बिना काट-छाँट किए तथा भली प्रकार नत्थी/स्पाइरल बाईंडिंग की गई हो। आवश्यकता प्रतीत होने पर मुख्य बिन्दुओं को रेखांकित किया जा सकता है। उत्तर-पुस्तिका में केवल नीले अथवा काले रंग की स्याही वाले पेन अथवा बालपेन का ही प्रयोग कीजिए। उत्तर-पुस्तिका में प्रश्नों के उत्तर पूछे गए प्रश्नों के क्रमानुसार ही लिखिए । किसी भी प्रश्न का उत्तर लिखना प्रारम्भ करने से पूर्व सम्बन्धित प्रश्न क्रमांक अवश्य लिखिए। प्रत्येक नए उत्तर का प्रारम्भ नए पृष्ठ से कीजिए। उत्तर-पुस्तिका हेतु A–4 साइज़ के कागज़ों का प्रयोग करें। कार्य सम्पन्नोपरान्त सभी कागज़ों को भली प्रकार नत्थी कर लीजिए। विद्यार्थियों को सलाह दी जाती है कि अपनी उत्तर-पुस्तिका की सुरक्षित प्रस्तुति हेतु वे समस्त कागज़ों को स्पाइरल बाइंडिंग करा लें। विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार गुणवत्तापूर्ण कागज़ के बड़े आकार के जिल्दबंद रजिस्टर में भी सत्रीय कार्य प्रस्तुत कर सकते हैं। सत्रीय कार्य के अंतिम पृष्ठ पर कुल पृष्ठ संख्या लिखकर अपने हस्ताक्षर कीजिए। सत्रीय कार्य की विद्यार्थी द्वारा स्वयं की हस्तलिपि में लिखित प्रति ही स्वीकार की जाएगी। आवश्यकता प्रतीत होने पर विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत सत्रीय कार्य में लिखित हस्तलिपि (हेंड राइटिंग) तथा सत्रांत परीक्षा में विद्यार्थी द्वारा उत्तर-पुस्तिका में लिखित हस्तलिपि (हेंड राइटिंग) का मिलान करवाया जाएगा। दोनों की हस्तलिपि (हेंड राइटिंग) में भिन्नता पाए जाने पर ऐसे सत्रीय कार्यों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा। सत्रीय कार्य की कंप्यूटर टंकित प्रति अस्वीकार्य है। कंप्यूटर टंकितसत्रीय कार्यों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।

सत्रीय कार्य प्रस्तुतीकरण :

सत्रीय कार्य प्रस्तुतीकरण से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़िए :--

01. सत्रीय कार्य उत्तर-पुस्तिका के मुख पृष्ठ के प्रारूप हेतु परिशिष्ट क्रमांक - 01 देखिए।

02. उत्तर-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के शीर्षभाग पर सर्वोपरि दूर शिक्षा निदेशालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा का नाम एवं पूर्ण पता लिखिए।

03. उत्तर-पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर विश्वविद्यालय के नाम और पते के नीचे पाठ्यक्रम का नाम : एम.ए . हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2016-18, द्वितीय सेमेस्टर, पाठ्यक्रम कोड : एम ए एच डी, पाठ्यचर्या क्रमांक, पाठ्यचर्या का शीर्षक तथा सत्रीय कार्य कोड लिखिए।

04. उत्तर-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के मध्यभाग में अपना पूरा नाम (कृपया नाम के पूर्व श्रीमती/कुमारी/सुश्री/श्री/डॉ. न लिखें), अनुक्रमांक, नामांकन संख्या, पत्राचार पता (पिन कोड सहित) तथा मोबाइल नं. लिखिए।

05. उत्तर-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के निम्नभाग में सम्बन्धित अध्ययन केंद्र का नाम एवं पता लिखिए तथा स्थान एवं दिनांक अंकित करते हुए अपने हस्ताक्षर अवश्य कीजिए। अहस्ताक्षरित प्रति अस्वीकार्य है।

06. सत्रीय कार्य उत्तरपुस्तिका को जाँच हेतु सम्बन्धित अध्ययन केंद्र के पते पर जमा करा दीजिये। लिफ़ाफ़े के शीर्ष पर **सत्रीय कार्य, एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र 2016-18, द्वितीय सेमेस्टर (एम ए एच डी)** अवश्य लिखिए।

दूर शिक्षा निदेशालय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2016-18 , द्वितीय सेमेस्टर

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र

सत्रीय कार्य कोड : **एम ए एच डी - 07** अधिकतम अंक : 30 %

द्वितीय सेमेस्टर

प्रथम पाठ्यचर्या (अनिवार्य)

पाठ्यचर्या कोड : MAHD - 07

पाठ्यचर्या का शीर्षक : मध्यकालीन हिन्दी काव्य

- **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 06 प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 800 शब्दों में लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न के लिए अधिकतम अंक 05 हैं।**

प्रश्न 01 :- "निर्गुण सन्त कवियों की अनुभव वाणी में उनके दार्शनिक विचार अत्यन्त सरल तथा सीधी-सादी भाषा में अभिव्यक्त हुए हैं।" उक्त कथन की पुष्टि करते हुए सन्त कवियों के ब्रह्म, जीव, जगत् एवं माया सम्बन्धी विचारों की विवेचना कीजिए।

प्रश्न 02 :- "भावात्मक तथा साधनात्मक दोनों प्रकार के रहस्यवाद की सुन्दर अभिव्यंजना 'पद्मावत' में हुई है।" मूल्यांकन कीजिए।

प्रश्न 03 :- "सूरदास के काव्य में जितनी सहृदयता एवं भावुकता है, प्रायः उतनी ही चतुरता और वाग्विदग्धता भी।" भ्रमरगीत से उपयुक्त उद्धरण देते हुए उक्त कथन की मीमांसा कीजिए।

प्रश्न 04 :- तुलसी के राम का स्वरूप-विश्लेषण करते हुए कबीर के राम और तुलसी के राम में साम्य और वैषम्य को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 05 :- "केशव के काव्य में स्थान-स्थान पर जिस क्लिष्टता व नीरसता के दर्शन होते हैं, उसने केशव को हृदयहीन कवि के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है। यही कारण है कि आलोचकों ने इन्हें 'कठिन काव्य का प्रेत' की संज्ञा दे डाली है।" उक्त मत के सन्दर्भ में केशव की हृदयहीनता की परीक्षा कीजिए।

प्रश्न 06 :- "हावों और अनुभावों का जैसा सच्चा विधान बिहारी की कविता में दिखाई पड़ता है, वैसा हिन्दी के किसी दूसरे कवि में नहीं मिलता।" इस कथन की युक्तियुक्त पुष्टि कीजिए।

प्रश्न 07 :- "भूषण राष्ट्रीय भावों के गायक है। उनकी वाणी पीड़ित प्रजा के प्रति एक अपूर्व आश्वासन है। भूषण के वीर काव्य ने पूरे राष्ट्र में राष्ट्रीय भावना संचरित करने का प्रयास किया।" उक्त कथन के आलोक में भूषण की राष्ट्रीय भावना की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

प्रश्न 08 :- “प्रेम की पीर ही लेकर इनकी वाणी का प्रादुर्भाव हुआ। प्रेम मार्ग का ऐसा प्रवीण और धीर पथिक ... ब्रजभाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ।” आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के उक्त कथन के परिप्रेक्ष्य में घनानन्द की विरह भावना का वैशिष्ट्य प्रतिपादित कीजिए।

*****

दूर शिक्षा निदेशालय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2016-18 , द्वितीय सेमेस्टर

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र

सत्रीय कार्य कोड : **एम ए एच डी - 08** अधिकतम अंक : 30 %

द्वितीय सेमेस्टर

द्वितीय पाठ्यचर्या (अनिवार्य)

पाठ्यचर्या कोड : MAHD - 08

पाठ्यचर्या का शीर्षक : हिन्दी नाटक एवं रंगमंच

- **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 06 प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 800 शब्दों में लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न के लिए अधिकतम अंक 05 हैं।**

प्रश्न 01 :- हिन्दी नाटकों की भाषा के क्रमिक विकास का विश्लेषण कीजिए।

प्रश्न 02 :- "हिन्दी नाटक और रंगमंच की आधारशिला रखने का श्रेय भारतेन्दु को जाता है।" उक्त कथन की विवेचना कीजिए।

प्रश्न 03:- नाट्य-निर्देशकों के 'अन्धेरनगरी' के प्रति तीव्र आकर्षण की कारण-मीमांसा प्रस्तुत कीजिए।

प्रश्न 04 :- 'अन्धेरनगरी' की सांकेतिकता एवं उसकी प्रासंगिकता को रेखांकित कीजिए

प्रश्न 05 :- हिन्दी नाट्य साहित्य की क्रमिक विकास-यात्रा का परिचय देते हुए उसमें जयशंकर प्रसाद के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 06 :- "अन्तर्द्वन्द्व चित्रण के बिना 'चन्द्रगुप्त' नाटक इतना प्रभावशाली नहीं बन पाता।" उक्त कथन की पुष्टि में 'चन्द्रगुप्त' नाटक में पाए जाने वाले अन्तर्द्वन्द्व के महत्त्व और स्थान पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 07 :- 'अश्वत्थामा' किन मानवीय प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्त्व करता है ? 'अन्धा युग' के आधार स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 08 :- 'अन्धा युग' के चरित्रों की प्रतीकात्मकता का उल्लेख करते हुए नाटक में वर्णित मूल्य-संघर्ष की प्रासंगिकता का आकलन कीजिए।

*****

दूर शिक्षा निदेशालय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2016-18 , द्वितीय सेमेस्टर

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र

सत्रीय कार्य कोड : **एम ए एच डी - 09** अधिकतम अंक : 30 %

द्वितीय सेमेस्टर

तृतीय पाठ्यचर्या (अनिवार्य)

पाठ्यचर्या कोड : MAHD - 09

पाठ्यचर्या का शीर्षक : पाश्चात्य काव्यशास्त्र

- **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 06 प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 800 शब्दों में लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न के लिए अधिकतम अंक 05 हैं।**

प्रश्न 01 :- प्लेटो ने अपने काव्य सिद्धान्त में काव्य के किस पक्ष को अधिक महत्त्व है ? अरस्तू का 'अनुकृति सिद्धान्त' प्लेटो से किन सन्दर्भों में भिन्न है ? समझाकर लिखिए।

प्रश्न 02 :- लोंजाइनस के अनुसार औदात्य वाणी का उत्कर्ष, कान्ति और वैशिष्ट्य है जिसके कारण महान् कवियों, इतिहासकारों दार्शनिकों को प्रतिष्ठा, सम्मान और ख्याति प्राप्त हुई है क्योंकि इसी से उनकी कृतियाँ गरिमामय बनी हैं और उनका प्रभाव युग-युगान्तर तक प्रतिष्ठित हो सका है। काव्य में उदात्त मूल्यों का पक्ष लेने वाले लोंजाइनस के काव्य सिद्धान्त का विस्तृत विवेचन कीजिए।

प्रश्न 03 :- कॉलरिज के 'कल्पना सिद्धान्त' की सारगर्भित विवेचना कीजिए।

प्रश्न 04 :- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'अभिव्यंजना सिद्धान्त' को 'भारतीय वक्रोक्तिवाद का विलायती उत्थान' कहा है। क्या इन दोनों मतों को एक ही कोटि में रखना तर्कसंगत है ? उक्त दोनों सिद्धान्तों के साम्य तथा वैषम्य को स्पष्ट करते हुए अपना मत रखिए।

प्रश्न 05 :- टी. एस. एलियट के 'निर्वैयक्तिकता के सिद्धान्त' की सारगर्भित व्याख्या कीजिए।

प्रश्न 06 :- आई. ए. रिचर्ड्स द्वारा प्रतिपादित 'मनौवैज्ञानिक मूल्य का सिद्धान्त' और 'सम्प्रेषण का सिद्धान्त' की विस्तारपूर्वक मीमांसा कीजिए।

प्रश्न 07 :- फ्रांस की 1789 में हुई राज्यक्रान्ति पश्चिम में मानवीय मुक्ति और मानव के नवीन अभ्युदय की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह साहित्य, कला एवं चिन्तन में क्रान्ति की भी सूचक है। इसी को स्वच्छन्द, मुक्त और उदार धारा का प्रस्तोता भी कहा जाता है। 'स्वच्छन्दतावाद' की पृष्ठभूमि का उल्लेख करते हुए स्वच्छन्दतावादी काव्यधारा के प्रतिमानों को व्याख्यायित कीजिए।

प्रश्न 08 :- साहित्य में ‘उत्तरआधुनिकतावाद’ के तत्त्वों की ‘आधुनिकतावाद’ के तत्त्वों से भिन्नता प्रदर्शित करते हुए उत्तरआधुनिक रचनाओं में प्रस्तुत विषय-वास्तु (थीम्स) और तकनीकों को विश्लेषित कीजिए।

*****

दूर शिक्षा निदेशालय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2016-18 , द्वितीय सेमेस्टर

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र

सत्रीय कार्य कोड : **एम ए एच डी - 10** अधिकतम अंक : 30 %

द्वितीय सेमेस्टर

चतुर्थ पाठ्यचर्या (अनिवार्य)

पाठ्यचर्या कोड : MAHD - 10

पाठ्यचर्या का शीर्षक : हिन्दी साहित्य का इतिहास – 2

- **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 06 प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 800 शब्दों में लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न के लिए अधिकतम अंक 05 हैं।**

प्रश्न 01 :- रीतिमुक्त कवि, रीतिबद्ध एवं रीतिसिद्ध कवियों से किस अर्थ में भिन्न हैं? विश्लेषण कीजिए।

प्रश्न 02 :- द्विवेदीयुगीन हिन्दी कविता की ऐतिहासिक भूमिका की पुष्टि कीजिए।

प्रश्न 03 :- ''मार्क्सवाद प्रगतिवादी साहित्य का वैचारिक आधार है।'' विचार कीजिए।

प्रश्न 04 :- "'प्रयोगवाद' और 'नई कविता' पूर्ववर्ती कविता से भिन्न है।" परीक्षा कीजिए।

प्रश्न 05 :- प्रेमचन्द को उपन्यास सम्राट क्यों कहते हैं ? उनके किसी एक उपन्यास का रचनोद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 06 :- नयी कहानी के विकास में प्रमुख महिला कथाकारों के योगदान पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 07 :- हिन्दी आलोचना की विकास-यात्रा पर प्रकाश डालते हुए महत्त्वपूर्ण आलोचकों का योगदान रेखांकित कीजिए।

प्रश्न 08 :- शुक्लोत्तरयुगीन प्रमुख निबन्धकारों की रचनाशीलता पर विचार करते हुए मूल्यांकन कीजिए कि विचार और शैली की दृष्टि से ये निबन्धकार शुक्लजी से कैसे भिन्न हैं?

*****

दूर शिक्षा निदेशालय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2016-18 , द्वितीय सेमेस्टर

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र

सत्रीय कार्य कोड : **एम ए एच डी - 11** अधिकतम अंक : 30 %

द्वितीय सेमेस्टर

पंचम पाठ्यचर्या (वैकल्पिक)

विकल्प – 01

पाठ्यचर्या कोड : MAHD - 11

पाठ्यचर्या का शीर्षक : हिन्दी पत्रकारिता

- **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 06 प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 800 शब्दों में लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न के लिए अधिकतम अंक 05 हैं।**

प्रश्न 01 :- भारतीय नवजागरण की अभिव्यक्ति हिन्दी पत्रकारिता में किस प्रकार हुई है ? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 02 :- साक्षात्कार का अर्थ, परिभाषा एवं विभिन्न सिद्धान्तों का उल्लेख करते हुए साक्षात्कार प्रक्रिया के प्रमुख तत्त्वों का को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 03 :- आंचलिक पत्रकारिता के विविध स्वरूपों की चर्चा कीजिए। आंचलिक पत्रकारिता के वर्तमान सन्दर्भ एवं चुनौतियों पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 04 :- हिन्दीभाषी राज्यों में हिन्दी पत्रकारिता के स्वरूप एवं विकास की मीमांसा कीजिए।

प्रश्न 05 :- भाषायी सांस्कृतिक चेतना के आलोक में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के योगदान की चर्चा कीजिए।

प्रश्न 06 :- बालमुकुन्द गुप्त की पत्रकारिता में भारतीय राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति किस प्रकार हुई है ? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 07 :- मुंशी प्रेमचंद की पत्रकारिता में भारतीय राष्ट्रीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति किस प्रकार हुई है ? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 08 :- राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना के संदर्भ में बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के पत्रकारीय अवदान की विवेचना कीजिए।

*****

दूर शिक्षा निदेशालय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, सत्र : 2016-18 , द्वितीय सेमेस्टर

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र

सत्रीय कार्य कोड : **एम ए एच डी - 12** अधिकतम अंक : 30 %

द्वितीय सेमेस्टर

पंचम पाठ्यचर्या (वैकल्पिक)

विकल्प – 02

पाठ्यचर्या कोड : MAHD – 12

पाठ्यचर्या का शीर्षक : पाठालोचन

- **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 06 प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 800 शब्दों में लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न के लिए अधिकतम अंक 05 हैं।**

प्रश्न 01 :- "सर्वदेशाक्षरभिज्ञः सर्वशास्त्रविशारदः।
लेखकः कथितो राज्ञः सर्वाधिकरणेषु वै॥
शीर्षोपेतान सुसंपूर्णान् समश्रेणिगतान् समान्।
अक्षरान् वै लिखेद् यस्तु लेखकः स वरः स्मृतः॥
उपायवाक्यकुशलः सर्वशास्त्रविशारदः।
बह्वर्थवक्ता चाल्पेन लेखकः स्याद् भृगूत्तमः॥"

मत्स्यपुराण, अध्याय 189 में उल्लिखित उक्त श्लोक के सन्दर्भ में पाठालोचक के ज्ञान एवं उसके गुणों के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक चर्चा कीजिए।

प्रश्न 02 :- प्रतिलिपिकार के लिए नितान्त आवश्यक तीन गुणों – सामान्य बुद्धिमत्ता, प्रामाणिकता और सावधानी के अभाव में उनके द्वारा की जाने वाली भूलों के परिणामस्वरूप पाठ विकृतियाँ (Textual Errors) उत्पन्न होती हैं। पाठ विकृतियों की परिभाषा देते हुए उन्हें प्रमुख वर्गों में विभक्त कीजिए और उनकी सोदाहरण विवेचना कीजिए।

प्रश्न 03 :- वे कौन-कौनसे उपाय हैं जिन्हें अपनाने से पाण्डुलिपि में पाठशुद्धि बनी रह सकती है अथवा अशुद्ध पाण्डुलिपियों से शुद्धपाठ का निर्धारण किया जा सकता है? ऐसे ग्राह्य उपायों को समझाकर लिखिए।

प्रश्न 04 :- आधुनिक पाठालोचन विद्वानों द्वारा स्वीकृत सिद्धान्तों, यथा – स्वैच्छिक पाठ निर्धारण सिद्धान्त, तुलनात्मक पाठ निर्धारण सिद्धान्त और शास्त्रीय पाठ निर्धारण सिद्धान्त का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।

प्रश्न 05 :- "उच्चतर आलोचना में रचना की विभिन्न प्रतिलिपियों के महत्त्व, उद्देश्य एवं उनकी प्रकृति का निर्णय होना चाहिए। उनके लेखन-काल एवं लेखन की परिस्थितियों पर विचार, वे पृथक्-पृथक् एक व्यक्ति की या एकाधिक व्यक्तियों की कृतियाँ हैं, किस समय वे अपने वर्तमान रूप में पहुँची हैं, क्या वे पूर्वकालीन श्रोतों के पाठों से युक्त हैं और यदि ऐसा है तो उन पाठों का पुनर्निर्माण तथा उनकी तिथि का निर्धारण आदि कार्य उच्चतर आलोचना के

क्षेत्र का निर्धारण करते हैं।" जी. बी. ग्रे के उक्त कथन के आलोक में स्पष्ट कीजिए कि उच्चतर आलोचना के अन्तर्गत पाठालोचक को साधारणतया किन बातों का उल्लेख करना चाहिए ?

प्रश्न 06 :- जायसी की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और प्रामाणिक रचना 'पदुमावति' है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ॰ माताप्रसाद गुप्त और डॉ॰ वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा इसे 'पद्मावत' नाम देकर इसके भिन्न-भिन्न पाठ प्रस्तुत किए गए हैं। डॉ॰ कन्हैया सिंह ने ठोस प्रमाणों के आधार पर इस रचना का नाम 'पदुमावति' सिद्ध किया है। उन्होंने रचना के पाठ पर शब्दशः विचार कर सम्पूर्ण रचना में छोटे-बड़े कई सौ स्थलों पर पूर्ववर्ती सम्पादकों से भिन्न और अधिक विश्वसनीय पाठ दिया है। डॉ॰ सिंह द्वारा प्रस्तुत पाठ में से किन्हीं 05 स्थलों के पाठ का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।

प्रश्न 07 :- हिन्दी के विशिष्ट सम्पादन में 'बिहारी रत्नाकर', 'कवित्त रत्नाकर', 'नन्ददास ग्रन्थवाली', 'केशव ग्रन्थवाली', 'शिवसिंह सरोज' रचनाओं का स्वतन्त्र सम्पादन तथा 'पद्मावत', 'बीसलदेव रास', छिताई वार्ता', कबीर ग्रन्थावली', 'मधुमालती', 'पृथ्वीराज रासउ', 'श्रीरामचरितमानस' का शास्त्रीय सम्पादन हुआ है। उक्त रचनाओं में से किसी एक रचना के पाठ की सम्यक् समीक्षा कीजिए।

प्रश्न 08 :- विभिन्न कालखण्डों में विभक्त करते हुए हिन्दी पाठालोचन के इतिहास का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।

*****

सत्रीय कार्य उत्तर-पुस्तिका के मुख पृष्ठ का प्रारूप

………………………………………………………………………

›

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

दूर शिक्षा निदेशालय
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
गांधी हिल्स, पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र – 442 001
फोन / फैक्स नं. : 07152&247146 वेब साईट : www.hindivishwa.org

………………………………………………………………………

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम
सत्र 2016-18
पाठ्यक्रम कोड : एम ए एच डी – 010
<u>द्वितीय सेमेस्टर</u>

………………………………………………………………………

सत्रीय कार्य उत्तर-पुस्तिका

सत्रीय कार्य कोड :

पाठ्यचर्या क्रमांक :

पाठ्यचर्या कोड :

पाठ्यचर्या का शीर्षक :

………………………………………………………………………

विद्यार्थी का नाम :

अनुक्रमांक :

नामांकन संख्या :

पत्राचार पता :

मोबाइल नं. :

ई-मेल :

………………………………………………………………………

सम्बन्धित अध्ययन केंद्र का नाम एवं पता :

दिनांक :

स्थान :

विद्यार्थी के हस्ताक्षर :

………………………………………………………………………